

वस्तो तां तेनैव केशवः । अनुप्रविश्य भावज्ञो निनायात्मवशम् HARIV. 8332. fg. Spr. 2443. नीतिशास्त्राणि eindringen in PAÑĀT. 201, 23. — आस्ते-
नानुप्रविष्टो ऽहं शरीरे तव MBH. 3, 12941. पृथिवीम् ÇAṆK. zu BRH. ÂR.
UP. S. 293. अप्सु 293. एतत् BHĀG. P. 3, 3, 6. 6, 3. 32, 10. 4, 24, 64. 5, 11,
14. 7, 9, 12. 30. MĀRK. P. 46, 10. ÇAṆK. zu KHĀND. UP. S. 18. अन्योऽन्या-
नुप्रविष्ट in einander befindlich SUPN. 1, 313, 11. पथिकसार्धं विदिशगामि-
नमनुप्रविष्टः so v. a. schloss sich an MĀLAV. 67, 19. अनुप्रविष्ट mit pass.
Bed. : शवो वेतालानुप्रविष्टः KATHĀS. 73, 290. 121, 174. — 2) nach Jmd in
ein Haus, in ein Gemach treten, zu Jmd hereintreten; mit acc. der Person
MBH. 1, 396. 4275. 7762. 7800. HARIV. 6472. RĀĠA-TAR. 3, 410. so v. a.
sich zu Jmd flüchten MBH. 12, 4985. कृष्णानुप्रविष्टः nach Kṛṣṇa
hereingetreten HARIV. 8166. देव्यां गीतायामनुप्रविष्टा geflüchtet zu PRAB.
103, 9. — Vgl. अनुप्रवेश fg. — caus. eingehen machen: योनिम् MBH. 14, 487.
— अभिप्रः hineingehen in —, sich ergießen in (acc.), von einem Flusse
BHĀG. P. 5, 17, 6. fgg. महामग्नौ धातमभिप्रविष्टः gerathen in R. 2, 21, 53.
st. निपानगम्भीरमभिप्रविष्टम् HARIV. 8799 liest die neuere Ausg. ० ग-
म्भीरमिव प्र ०. — Vgl. अभिप्रवेश.

— प्रतिप्रः zurückkehren in: नगरम् R. 2, 89, 9 (97, 14 GORR.).

— संप्र 1) eintreten —, hineingehen —, fahren in: गृहम्, वेश्म ÂCV.
GRHJ. 4, 6, 7 (० विष्ट). R. 3, 61, 3. कुटीम् 2, 123, 24. नगरम्, पुरम् MBH. 1,
3303. 3, 15140. 4, 1156. R. 5, 9, 45. स्वराष्ट्रम् RĀĠA-TAR. 4, 342 (० वि-
ष्ट). येनैव संप्रविष्टः स पथा तेनैव निर्ययौ R. 7, 23, 4, 89. VARĀH. BRH.
S. 91, 3. RĀĠA-TAR. 6, 171. पूर्वार्द्धम् 4, 514. सरस्वती । देवस्य वदने सा-
त्तात्संप्रविष्टा KATHĀS. 6, 140. समुद्रम् MBH. 1, 3339. जलम् 13, 2646. स्व-
लितं ज्ञातेदसम् 7, 2606. यदस्य वारिजं किंचिदपस्तत्संप्रवेद्यति 14, 796.
अदितिं देवाः सर्वे HARIV. 173 = VP. bei MUIR, ST. 4, 104. MBH. 13, 2291.
गात्राणि (so die ed. Bomb.) गात्रैरस्याहं संप्रवेद्ये हि रतितुम् 2293. हि-
न्नाध्याणीव संपेतुः संप्रविश्य परस्परम् (मातङ्गः!) MBH. 7, 838. मानसम् in
Jmdes Herz sich Eingang verschaffen RĀĠA-TAR. 8, 1614. ध्यानम् in Ge-
danken gerathen R. 7, 26, 52. — 2) geschlechtlich betöhlen (vom Manne):
पतिर्भायां संप्रविश्य Spr. 4492. 4639. — 3) sich zu Jmd halten, verkeh-
ren mit: धर्मान्वितासंप्रविशेद्विः कृत्वेकं दुष्कृतीन् MBH. 12, 4545. 4849.
— 4) संप्रविश्य RĀĠA-TAR. 6, 361 fehlerhaft für संप्रवेद्यः; s. Spruch 3042.
— Vgl. संप्रवेश. — caus. eintreten lassen, hineinführen: सभाम् RĀĠA-
TAR. 4, 555. स्वपुरम् HARIV. 3845 (nach der Lesart der neueren Ausg.).
आश्रमे R. 7, 30, 1. समीपं राक्षसेन्द्रस्य 5, 44, 19. HARIV. 4568. RĀĠA-TAR.
8, 2138. संप्रवेशित in's Land wieder eingelassen im Gegens. zu निर्वा-
सित verbannt 6, 342. व्यसने in's Unglück bringen Spr. 3042 (Conj.). —
संप्रवेद्य RĀĠA-TAR. 4, 325 fehlerhaft für संप्रविश्य.

— वि eingehen in: अन्वत्तरम् MAITRĀJUP. 2, 6. — caus. scheinbar HARIV.
3910, wo aber mit der neueren Ausg. विवेशतुः (= विवि०) zu lesen ist.

— अनुविः sich da und dort niederlassen, — einfinden: त इदं क्षेत्रमा-
विशतु त इदं क्षेत्रमनु विविशतु TS. 2, 4, 8, 2.

— सम् 1) herbeikommen, sich anschließen: इमा नारिराज्जनेन सर्पिषा
सं विशतु RV. 10, 18, 7. सं तौ विशन्तोषधीरुतापः VS. 8, 25. — 2) ein-
treten —, eingehen —, fahren in: सुतलम् BHĀG. P. 10, 83, 34. अग्निमि-
हम् MBH. 1, 6741. KATHĀS. 61, 12. परिचुम्बति संविश्य धमरश्चूतमञ्जरीम्
R. 3, 79, 17. आपः पृथिवीं संविशतु verlaufen sich in die Erde KAUC. 103.

गन्धर्वीश्यापि यं दिव्याः संविशति नरम् MBH. 3, 14505. बह्वीर्योनीः 13,
1923. ब्राह्मीं तनुम् 12, 7171 (med.). पस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविशेश MUND.
UP. 3, 1, 9. आत्मैव संविशत्यात्मनात्मानम् MĀND. UP. 12. Nṛs. TĀP. UP.
in Ind. St. 9, 134. विधिं क्वाथं विधयो संविशति gehen auf in MBH. 13,
3539. — 3) sich niederlassen, — niederlegen, — zur Ruhe begeben ÇAT.
BR. 8, 2, 4, 20. 11, 6, 4, 7. 13, 4, 4, 9. पत्न्या KĀT. 14, 8. LĀTJ. 3, 4, 4. 5, 10,
6. ÂCV. GRHJ. 2, 3, 7. 9, 5. गृहेषु ÇR. 2, 3, 17. AIT. BR. 8, 28. चर्मणि वा
स्थपिडले वा KĀND. UP. 5, 2, 8. संवेद्यन् (so ist st. संवेद्यन् zu lesen) ज्ञा-
यि KAUSH. UP. 2, 10. M. 2, 194. 4, 55. 76. 7, 225. JĀĠN. 1, 114. 330. MBH.
1, 688. 4299. शयनीये मया सह 4712 (med.). चर्मं संविशति या प्रथमं प्र-
तिबुध्यते 2, 2177. 3, 13149. 13, 1456. 2745. R. 2, 33, 5. R. GORR. 2, 8, 56.
53, 7. 4, 34, 3. 33, 16. 20. fg. 5, 92, 19. SUPN. 2, 163, 11. KATHĀS. 36, 316.
BHĀG. P. 4, 26, 11. 7, 13, 26. 10, 15, 46. शादलोपरि 20, 30. व्याधितैर्न सं-
विशेत् er schlafe nicht mit Kranken JĀĠN. 1, 138. शय्याम् sich auf's Bett
legen R. 2, 46, 14 (44, 14 GORR.). संविष्ट zur Ruhe gegangen, schlafend,
ruhend MBH. 1, 693. 3924. तृणेषु R. 2, 86, 11. R. GORR. 2, 48, 10. 94, 12.
5, 14, 13 (कुस्तिन्). कुशशयने RAGH. 1, 95. उरूशाखा KATHĀS. 42, 43. 34,
162. रत्नपीठे Verz. d. Oxf. H. 28, b, 33. MĀRK. P. 34, 59. वृत्तिं PRAB. 21,
5. — 4) beschlafen: संविशेदति विस्त्रियम् M. 3, 48. JĀĠN. 1, 79. MĀRK. P.
34, 81. — 5) sich setzen zu (acc.): संज्ञतमश्चम् HARIV. 11236. पैः संविष्टः
BHĀG. P. 9, 11, 22. — 6) sich mit Etwas (acc.) befassen: दृष्टं श्रुतमसद्बु-
द्ध्या नानुध्यायेन्न संविशेत् (= उपभुञ्जीत Comm.) BHĀG. P. 9, 19, 20. — Vgl.
संवेश fgg. — caus. legen —, setzen auf, in; bringen in, nach: तत्पे
KAUC. 79. शयने MBH. 1, 4274. R. 2, 76, 5. शिविकायाम् HARIV. 3383. R.
GORR. 2, 83, 8. पर्यङ्के R. SCHL. 2, 34, 20. आसनेषु PRAB. 24, 4. चितामध्ये
R. 2, 76, 17. चितायाम् 6, 96, 9. तैलद्रोण्याम् 2, 66, 14. — 6, 96, 15. परं ब्रह्म
व्रते Verz. d. Oxf. H. 68, b, 1. वाक्का सत्यं च बुद्धौ संवेशितानि ते MBH.
12, 1556.

— अनुसम् sich zur Ruhe begeben in der Richtung von, — im Gefolge
von: मनो निविष्टमनुसंविशस्व AV. 18, 3, 9. die Sonne एतो कुशीमनु
संविशति TBR. 1, 3, 10, 7. KAUC. 103. सुतामनुसंविशेश wenn sie schlief,
legte er sich auch zur Ruhe RAGH. 2, 24.

— अभिसम् sich vereinigen um —, bei AV. 3, 3, 4. इमां मेयिमभिसंवि-
शधम् 8, 3, 20. fg. आत्मनात्मानम् VS. 32, 11. इन्द्रं देवाः 13, 25. ÇAT. BR.
14, 4, 1, 19. TBR. 2, 7, 10, 3. 3, 1, 2, 7. KHĀND. UP. 1, 11, 5. 3, 6, 2. यत्प्रय-
त्यभिसंविशति aufgehen in TAITT. UP. 3, 1. fgg. Nṛs. TĀP. UP. in Ind.
St. 9, 72. 100.

— उपसम् 1) sich legen neben (acc.): महिष्यश्चम् KĀTJ. ÇR. 20, 6, 14.
— 2) = अभिसम् TBR. 2, 2, 10, 6. 3, 1, 1, 7. — caus. sich dazu legen las-
sen: पत्नीम् KAUC. 80. daneben sitzen lassen MBH. 14, 2645.

2. विष् (= 1. विष्) nom. विट् P. 8, 2, 36. VOP. 3, 149. 1) f. (in der
2ten und 3ten Bed. masc. nach MED.) a) Niederlassung, Wohnsitz, Haus
(Bed. 1 und 2 nicht überall sicher zu scheiden): भवा पापुर्विशो अ-
स्याः RV. 4, 4, 3. 37, 1. अश्वतो कृष्यं मानुषीषु विनु 7, 67, 7. विश्वासां गृ-
हपतिर्विशो मानुषीषाम् 6, 48, 8. विश्वाशं यस्या अतिथिर्बोवामि स यज्ञेन
वनवदेव मर्तान् welches Hauses Gast du wirst, der Mann u. s. w. 5, 3,
5. कमा जनें चरति कामु विनु 6, 21, 4. प्रास्मो अत्र पृतनासु प्र विनु draus-
sen im Felde und daheim 41, 5. 10, 91, 2. सं यद्वनं यद्विषोषधीषु विनु